कथा सरिता

साहित्य का महत्व

जब पंडित जवाहरलाल नेहरू देश के प्रधानमंत्री थे, तब उन्हीं के प्रयासों से कवि सम्मेलन शुरू हुआ था। उस समय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जैसे महान रचनाकार इस सम्मेलन में शिरकत करते थे। एक बार जब कवि सम्मेलन आयोजित किया गया और काव्यपाठ के बाद जब समापन की बेला आई, उस समय पंडित नेहरू और दिनकर अपने कुछ साथियों के साथ वापस लौट रहे थे। लौटते समय दिनकर अपने मित्रों के साथ आगे थे और पंडित नेहरू उनके पीछे। सीढ़ियों से उतरते वक्त अचानक पंडितजी का पैर फिसला और वे गिरते, इससे पहले ही उन्होंने अपने दो कदम आगे चल रहे दिनकर के कंधे पर हाथ रख दिया। आभार व्यक्त करते हुए पंडित नेहरू ने कहा - दिनकरजी शुक्रिया, आज आपके कारण मैं हादसे का शिकार होते-होते बच गया। मैत्री के ही भाव में दिनकर ने मुस्कराते हुए जवाब दिया - कोई बात नहीं पंडितजी, जब-जब किसी देश की राजनीति लड़खड़ाती है, साहित्य उसे सहारा देता है। साहित्य का धर्म है कि वह समाज को सही दिशा की ओर उन्मुख करे। गौरतलब है कि रूस के साम्यवादी आंदोलन से लेकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तक में साहित्यकारों ने समाज को जाग्रत और आंदोलित करने में बड़ी भूमिका निभाई। यह भी कि कई पुस्तकें इसलिए तत्कालीन तानाशाह सरकारों ने जब्त कर लीं क्योंकि उनकी सामग्री न केवल गलत दिशा में चली राजनीति को ठीक करने वाली थी, अपितु उसके माध्यम से समाज को भी सही दिशा की ओर जाने के संकेत दिए गए थे।

ऐसा भी प्रेम

एक फकीर बहुत दिनों तक बादशाह के साथ रहा। बादशाह का बहुत प्रेम उस फकीर पर हो गया। प्रेम भी इतना कि बादशाह रात को भी उसे अपने कमरे में सुलाता। कोई भी काम होता, दोनों साथ-साथ ही करते। एक दिन दोनों शिकार खेलने गए और रास्ता भटक गए। भूखे-प्यासे एक पेड़ के नीचे पहुंचे। पेड़ पर एक ही फल लगा था। बादशाह ने घोड़े पर चढ़कर फल को अपने हाथ से तोड़ा। बादशाह ने फल के छह टुकड़े किए और अपनी आदत के मुताबिक पहला टुकड़ा फकीर को दिया। फकीर ने टुकड़ा खाया और बोला, बहुत स्वादिष्ट! ऐसा फल कभी नहीं खाया। एक टुकड़ा और दे दें। दूसरा टुकड़ा भी फकीर को मिल गया। फकीर ने एक टुकड़ा और बादशाह से मांग लिया। इसी तरह फकीर ने पांच टुकड़े मांग का खा लिए। जब फकीर ने आखिरी टुकड़ा मांगा, तो बादशाह ने कहा, यह सीमा से बाहर है। आखिर मैं भी तो भूखा हूँ। मेरा तुम पर प्रेम है, पर तुम मुझसे प्रेम नहीं करते। और सम्राट ने फल का टुकड़ा मुंह में रख लिया। मुंह में रखते ही राजा ने उसे थूक दिया, क्योंकि वह कड़वा था। राजा बोला, तुम पागल तो नहीं, इतना कड़वा फल कैसे खा गए? उस फकीर का उत्तर था, जिन हाथों से बहुत मीठे फल खाने को मिले, एक कड़वे फल की शिकायत कैसे करूं? सब टुकड़े इसलिए लेता गया ताकि आपको पता न चले। ऐसा व्यक्ति जो होगा, वही संतुष्ट हो सकता है। संतोष का भी अपना गणित है। अपनी कैमिस्ट्री है।

शक्ति और उपयोग

महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध संत एकनाथ तीर्थयात्रा पर जा रहे थे। गंगाजल उनके पात्रों में भरा हुआ था। रास्ते में उन्होंने देखा, एक गधा बीमार हालत में प्यास के मारे छटपटा रहा है। संत एकनाथ उसके पास गए और उनके पास के पात्र में जो गंगाजल भरा था, वह सारा का सारा उस गधे को पिला दिया। गधे के प्राण लौट आए। वह उठकर खड़ा हो गया। साथ चल रहे लोगों को एकनाथ का यह काम मूर्खतापूर्ण लगा। लोगों ने कहा, जिस गंगाजल से शिवजी की मूर्ति का अभिषेक करना था, उसे एक जानवर को पिला दिया। अब तीर्थयात्रा का औचित्य ही क्या रहा? संत एकनाथ बोले - भाई, जिस भगवान का अभिषेक करना था, यह गंगाजल उसके पास पहुंच गया। मुझे मेरी तीर्थयात्रा का फल मिल गया।

एक शक्तिशाली आदमी ही कोई नया काम कर सकता है, कोई नई रेखा खींच सकता है। यह साधारण आदमी के वश की बात नहीं है। पहली बात है शक्ति और दूसरी बात है उस शक्ति का सम्यक उपयोग। इसके लिए कर्मवाद की भाषा में मोह का विलय या मूर्च्छा का विलय आवश्यक है। शक्ति और उसका उपयोग करने के लिए मूर्च्छा के सघन आवरण को तोड़ना जरूरी है। ये दो बातें हो तो बहुत बड़ा काम हो सकता है।

मृत्यु के भय से किया कुप्रवृत्तियों का त्याग

एक व्यापारी बुरी आदतों का शिकार था। वह चाहता था कि इनसे मुक्ति मिल जाए, किंतु बहुत प्रयास के बावजूद ऐसा नहीं हो पाया। फिर उसे किसी ने संत फरीद के बारे में बताया। वह तत्काल उनके पास पहुंचा और अपने विषय में सब कुछ बताकर पूछा - मेरी बुरी आदतें कैसे छूटेंगी? किंतु फरीद ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। वह भी धुन का पक्का था। उसने प्रतिदिन फरीद के पास आकर पूछना जारी रखा। फरीद ने भी उसे रोज टाला। एक दिन जब वह जिद पर उतर आया तो वे बोलेपृष्ठ मैं तुम्हें शेष मार्ग दिखाऊं? तुम्हारा जीवन अब चालीस दिनों से अधिक नहीं है। इतने कम समय में कैसे तुम सुधरोगे? यह सुनते ही व्यापारी तनाव में घिर गया। इसके बाद वह दु:ख, भय, पश्चाताप और भजन-पूजन में लगा रहा। जब चालीस दिन खत्म होने में एक दिन शेष बचा तो संत फरीद ने उसे बुलाकर पूछा - इन उनचालीस दिनों में कितनी बार तुमने दुष्टतापूर्ण कर्म किए? व्यापारी बोला - हैरानी की बात है कि इतने दिनों में एक बार भी मेरे मन में कोई गलत विचार नहीं आया। मन पर हर क्षण मृत्यु का डर बना रहा। तब संत ने उसे समझाया - बुराइयों से बचने का एकमात्र उपाय है कि हर क्षण मृत्यु को याद रखो और ऐसे काम करो, जिनसे आत्मा को सुकून मिले। व्यापारी फरीद के सुधार का तरीका समझ गया और उनके प्रति आभार व्यक्त कर निष्पाप जीवन जीने का संकल्प लिया। वस्तुत: मानव जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए सदैव सदचिंतन और सत्कर्म करें।

झूठ बोलकर भी पाया सच बोलने का पुण्य

एक किसान की फसल पाले ने बर्बाद कर दी। उसके घर में अन्न का एक दाना भी नहीं बचा। गांव में ऐसा कोई नहीं था, जो किसान की सहायता करे। किसान सोचता रहा कि वह क्या करे। जब कोई उपाय नहीं सूझा तो वह एक रात जमींदार के बाड़े में जाकर उनकी एक गाय चुरा लाया। जब सुबह हुई तो उसने गाय का दूध दुहकर अपने बच्चों को भरपेट पिलाया। उधर जमींदार के नौकरों को जब पता चला कि किसान ने जमींदार की गाय चुराई है तो उन्होंने जमींदार से शिकायत की। जमींदार ने पंचायत में किसान को बुलाया। पंचों ने किसान से पूछा - यह गाय तुम कहां से लाए? किसाने ने उत्तर दिया - इसे मैं मेले से खरीदकर लाया हूँ। पंचों ने बहुत घुमा-फिराकर सवाल किए, किंतु किसान इसी उत्तर पर अडिग रहा। फिर पंचों ने जमींदार से पूछा - क्या यह गाय आपकी ही है? जमींदार ने किसान की ओर देखा तो उसने अपनी आँखें नीची कर ली। तब जमींदार ने कहा - पंचों मुझसे भूल हुई। यह गाय मेरी नहीं है। पंचों ने किसान को दोषमुक्त कर दिया। घर पहुंचने पर जमींदार के नौकरों ने झूठ बोलने का कारण पूछा तो जमींदार बोला - उस किसान की नजरों में उसका दर्द झलक रहा था। मैं उसकी विवशता समझ गया। यदि मैं सच बोलता तो उसे सजा हो जाती। इसलिए मैंने झूठ बोलकर एक परिवार को और अधिक संकटग्रस्त होने से बचा लिया। वस्तुत: किसी के भले के लिए बोला गया झूठ पूर्णतया धार्मिक है, क्योंकि संकटग्रस्त की सहायता के लिए साधन की पवित्रता नहीं, बल्कि साध्य की सात्विकता देखी जाती है।

मंदसौर। पूरनजय राठौर महाराजा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कृष्णा तथा अन्य।

निम्बाहेड़ा। रामस्नेही संत हरिराम शास्त्री से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.शिवली, ब्र.कु.मनोज तथा अन्य।

पपरोला, हि.प्र.। बी.डी.सी. के अध्यक्ष अशोक नाथा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.प्रेम।

रघुनाथपूर। डी.वी.सी प्लांट में आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात् ब्र.कु.संध्या का शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए चीफ इंजीनियर जे.के.सिंह तथा अन्य।

राधनपूर। 'अमृत-महोत्सव' में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए स्वामी निजानंद, डॉ.आर.एन.नौलखा, दयाराम ठक्कर, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.प्रमिला तथा अन्य।

डोंबिवली, घाटकोपर। समर कैंप में स्कूल के बच्चों को नैतिक मूल्यों पर प्रेरणा देते हुए ब्र.कु.शकू।